भारत सरकार
शिक्षा मंत्रालय
स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग

लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या-287
उत्तर देने की तारीख-02/02/2026

निपुण भारत मिशन

†287. **श्री बृजमोहन अग्रवाल:**

क्या **शिक्षा** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मक कौशल (एफएलएन) लक्ष्यों को प्राप्त करने में निपुण भारत मिशन के अंतर्गत हुई प्रगति का छत्तीसगढ़ सहित राज्यवार/संघ राज्यक्षेत्रवार ब्यौरा क्या है साथ ही ग्रामीण बच्चों के कौशल संबंधी एएसईआर 2024 के आंकड़े क्या हैं;

(ख) विशेषकर बिहार और तेलंगाना जैसे पिछड़े राज्यों और छत्तीसगढ़ के भाषाई बाधाओं से प्रभावित जनजातीय जिलों में एफएलएन परिणामों में बढ़ती क्षेत्रीय असमानताओं को दूर करने के लिए लक्षित उपायों का ब्यौरा क्या है;

(ग) छत्तीसगढ़ में समान स्तर का सुधार लाने के लिए जनजाति बहुल प्राथमिक विद्यालयों में स्थानीय भाषाओं में डिजिटल एफएलएन सामग्री उपलब्ध कराने हेतु तैनात किए गए 'स्मार्ट क्लासरूम' या टैबलेट की संख्या कितनी है;

(घ) एक समान सुधार के लिए समग्र शिक्षा और दीक्षा जैसी योजनाओं के बीच अंतर्संबंधों का बहुभाषी संसाधनों और डिजिटल पहुंच के साथ कितना लाभ उठाया जा रहा है; और

(ङ.) ग्रामीण हितधारकों को लाभ पहुंचाने के लिए 2026-27 तक सार्वभौमिक एफएलएन दक्षता के लिए समयसीमा और कार्यनीतियाँ क्या हैं?

उत्तर

शिक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री
(श्री जयन्त चौधरी)

(क): राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में दूसरी कक्षा तक सभी बच्चों के लिए सार्वभौमिक बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान (एफएलएन) अर्जित करने को सर्वाधिक प्राथमिकता दी गई है। इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु, शिक्षा मंत्रालय ने दिनांक 5 जुलाई 2021, को राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों में शुरुआती अध्ययन के लिए एक समर्थकारी वातावरण बनाने हेतु राष्ट्रीय बोधपठन एवं संख्याज्ञान (निपुण भारत मिशन) शुरू किया।

इस मिशन के तहत, कई तरह की सुव्यवस्थित पहल की गई हैं। इसमें कक्षा 1 के सभी विद्यार्थियों के लिए तीन माह का स्कूल-रेडीनेस मॉड्यूल विद्या प्रवेश का पूरे देश में कार्यान्वयन करना; निष्ठा (स्कूल प्रमुखों और शिक्षकों के समग्र विकास हेतु राष्ट्रीय पहल)-एफएलएन के माध्यम से बड़े पैमाने पर शिक्षक और स्कूल प्रमुख का प्रशिक्षण, जिसमें गतिविधि-आधारित और बाल-केंद्रित शिक्षण पर ध्यान केंद्रित किया गया है; 3-8 वर्ष के बच्चों के लिए दीक्षा (डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर फॉर नॉलेज शेयरिंग)- एफएलएन सामग्री, जादुई पिटारा और ई-जादुई पिटारा जैसे खेल-आधारित और डिजिटल अधिगम संसाधन का प्रावधान; और मातृभाषा में बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान के लिए 121 स्थानीय भाषाओं में तैयार किए गए प्राइमर शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, प्राथमिक स्कूलों के साथ आंगनवाड़ी केंद्रों को एक ही जगह पर रखने संबंधी दिशा-निर्देश दिनांक 3 सितंबर 2025, को जारी किए गए हैं, जो स्कूल शिक्षा और आंगनवाड़ियों के बीच तालमेल सुनिश्चित करते हैं, जिससे प्री-स्कूल से कक्षा 1 में क्रमोन्नयन सरल हो जाता है।

परख (समग्र विकास के लिए ज्ञान का प्रदर्शन मूल्यांकन, समीक्षा और विश्लेषण) प्रत्येक शैक्षणिक चरण अर्थात बुनियादी, प्रारंभिक और मिडिल कक्षा 3, 6 और 9 के अंत में विद्यार्थियों की बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान, भाषा और गणित में अधिगम की क्षमता का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है। परख का आयोजन प्रत्येक तीन वर्ष में एक बार किया जाता है।

नवीनतम परख राष्ट्रीय सर्वेक्षण 2024 दिनांक 4 दिसंबर, 2024 को आयोजित किया गया था। राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के अनुसार परख 2024 रिपोर्ट दिनांक 2 जुलाई, 2025 को आधिकारिक तौर पर सार्वजनिक डोमेन में जारी कर दी गई है। इसे https://dashboard.parakh.ncert.gov.in/en पर देखा जा सकता है।

परख राष्ट्रीय सर्वेक्षण 2024 के परिणामों से बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान कौशल के परिणामों में उल्लेखनीय सुधार देखने को मिला है, जो एनईपी 2020 में परिकल्पित निपुण भारत मिशन के सकारात्मक प्रभाव को दर्शाता है। इससे पता चलता है कि ग्रामीण स्कूलों में तीसरी कक्षा के बच्चों का प्रदर्शन शहरी स्कूलों से बेहतर है और बुनियादी चरण पर सरकारी स्कूलों ने निजी स्कूलों से बेहतर प्रदर्शन किया है।

कक्षा 3: तुलनात्मक स्थिति		
	एनएएस 2021	पीआरएस 2024
भाषा	62	64
गणित	57	60

(ख): बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान (एफएलएन) में क्षेत्रीय और भाषाई असमानताओं को कम करने के लिए, सरकार ने एनईपी 2020 और निपुण भारत मिशन के तहत लक्ष्य आधारित कदम उठाए हैं।

तेलंगाना से प्राप्त जानकारी के अनुसार, वर्ष 2022 में राज्य-विशिष्ट एफएलएन मिशन शुरू किया गया, जो स्पष्ट रूप से परिभाषित अधिगम परिणाम और ज़िला-वार कार्यान्वयन के साथ एफएलएन को कक्षा V तक बढ़ाता है, जिसमें आशा अनुरूप प्रदर्शन न करने वाले क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। राज्य ने अधिगम कमियों को पहचानने और स्कूल परिसर-स्तर शैक्षणिक समीक्षा के माध्यम से सुधारात्मक कार्रवाई को गाइड करने के लिए शुरुआती, मध्य और अंतिम मूल्यांकन, मॉक टेस्ट और राष्ट्रीय प्रतिदर्श अध्ययन को संस्थागत रूप दिया है। बहु-स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से शिक्षकों की क्षमता को सुदृढ़ किया गया है, जिसमें उर्दू-माध्यम शिक्षकों के लिए प्रवेश कालिक और विशिष्ट प्रशिक्षण शामिल है। स्तर-आधारित शिक्षण, ब्रिज कोर्स, सुव्यवस्थित शिक्षण-अधिगम सामग्री, प्रिंट-रिच कक्षा और एफएलएन किट कमजोर छात्रों को सहायता प्रदान करते हैं, जबकि चयनित कम प्रदर्शन वाले जिलों में एआई-आधारित अनुकूलित अधिगम कार्यक्रम प्रायोगिक रूप से शुरू किए गए हैं। तेलंगाना स्कूल शिक्षा ऐप के माध्यम से विशिष्ट प्रोजेक्ट मैनेजमेंट यूनिट् और आईसीटी-समर्थित निगरानी सतत रूप से ट्रैकिंग और समीक्षा सुनिश्चित करते हैं। इन प्रयासों से साफ़ तौर पर सुधार हुआ है, तेलंगाना की कक्षा III रैंक एनएएस, 2021 में 36 से पीआरएस, 2024 में 27 हो गया है।

छत्तीसगढ़ द्वारा दी गई सूचना के अनुसार, जनजातीय बहुल इलाकों में भाषा की बाधाओं को दूर करने के लिए, एनईपी 2020 के अनुसार, प्राथमिक शिक्षा 18 स्थानीय भाषाओं और बोलियों में दी जा रही है। कक्षा स्तर पर विविधता का आकलन करने के लिए भाषा संबंधी मैपिंग की गई है, और जनजातीय इलाकों में बहुभाषी शिक्षा पहलें कार्यान्वित की जा रही हैं। शिक्षकों और शिक्षा अधिकारियों को प्रभावी स्थानीय भाषा-आधारित शिक्षा के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा है, जिसमें सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक शिक्षण-अधिगम सामग्री के विकास और वितरण के माध्यम से सहयोग प्रदान किया जाता है। स्टोरीटेलिंग त्योहार और स्कूल म्यूज़ियम के माध्यम से सामुदायिक जुड़ाव को सुदृढ़ किया जा रहा है, साथ ही मॉडल बहुभाषी स्कूल स्थापित करने और सर्वोत्तम पद्धतियों को दस्तावेजीकृत करने के प्रयास भी किए जा रहे हैं। सीआईआईएल, मैसूर की सहायता से *छत्तीसगढ़ी, हल्बी और सुरगुजिहा* भाषाओं में त्रिभाषी शब्दकोश और स्थानीय भाषाओं में डिजिटल सामग्री भी बनाई और वितरित की गई हैं। कुल मिलाकर, इन उपायों का उद्देश्य अलग-अलग और अल्पसेवित क्षेत्रों में समान एफएलएन परिणाम सुनिश्चित करना है।

बिहार से प्राप्त जानकारी के अनुसार, सरकार ने निपुण भारत मिशन के तहत विशिष्ट रूप से पिछड़े राज्यों में और भाषाई रूप से अलग-अलग जिलों में बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान (एफएलएन) में क्षेत्रीय असमानताओं को दूर करने के लिए लक्ष्य आधारित, संदर्भ-विशिष्ट कदम उठाए हैं। इसमें फोकस निदान से हटकर नियमित आधारभूत और मध्य अवधि मूल्यांकन द्वारा समर्थित एक सतत साक्ष्य-आधारित सुधार चक्र पर चला गया है। मूल्यांकनों के माध्यम से पहचानी गई अधिगम कमियों ने लक्षित शिक्षक व्यावसायिक विकास को दिशा दी है, जिसमें व्यावहारिक कक्षा प्रदर्शनों पर अधिक बल दिया गया है और साक्षरता तथा संख्याज्ञान में विषय-विशिष्ट "कठिनाइयों" का समाधान किया गया है। मानकीकृत शिक्षक पुस्तक, स्थानीय स्तर पर तैयार शिक्षण-अधिगम सामग्री का संवर्धन, तथा सुदृढ़ अभिभावक-शिक्षक भागीदारी तंत्र बेहतर कक्षा संबंधी गतिविधियों को और सहायता प्रदान

करते हैं। मिशन को कार्यान्वित करने के लिए बहु-स्तरीय शासन व्यवस्था पुनः स्थापित की गई है ताकि सख्त निगरानी और जवाबदेही सुनिश्चित की जा सके।

(ग): समग्र शिक्षा के तहत स्मार्ट कक्षा घटक में, राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को जनजातीय क्षेत्रों सहित उच्च प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तर (कक्षा VI-XII) के स्कूलों में, स्मार्ट क्लासरूम बनाने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।

प्रबंध पोर्टल के अनुसार, छत्तीसगढ़ राज्य में जनजातीय बहुल क्षेत्रों सहित आज की स्थिति के अनुसार, 10,771 स्मार्ट कक्षाएँ संस्वीकृत की गई हैं, जिनमें से 5,857 स्मार्ट कक्षाएँ कार्यात्मक हैं।

(घ) और (ङ): निपुण भारत मिशन समग्र शिक्षा योजना का एक हिस्सा है और मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकज्ञान (एफएलएन) कक्षाओं में गुणवत्तापूर्ण शिक्षण-अधिगम संसाधनों तक पहुंच को सुलभ करने के लिए दीक्षा डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग करता है। समग्र शिक्षा के तहत, राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों को आयु-उपयुक्त शिक्षण-अधिगम सामग्री के विकास और प्रसार, शिक्षक क्षमता निर्माण और डिजिटल संसाधनों सहित सक्षमकारी स्कूल अवसंरचना निर्माण के लिए वित्तीय और शैक्षणिक सहायता प्रदान की जाती है। दीक्षा पूर्व-प्राथमिक से ग्रेड 2 तक के छात्रों और शिक्षकों, अभिभावकों और देखभाल करने वालों की सहायता के लिए निपुण भारत के उद्देश्यों के अनुरूप एक समर्पित एफएलएन वर्टिकल का संचालन करता है। यह निष्ठा-एफएलएन ऑनलाइन शिक्षक प्रशिक्षण मॉड्यूल को भी एकीकृत करता है और माता-पिता की भागीदारी के लिए मार्गदर्शन प्रदान करता है। साथ में, इन अभिसरण प्रयासों से शिक्षकों की शैक्षणिक प्रथा को मजबूत हुआ है, मिश्रित शिक्षण सक्षम किया है, और ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों सहित एफएलएन कक्षाओं में डिजिटल सीखने की पहुंच में काफी वृद्धि की है।

निपुण भारत मिशन को वर्ष 2026-27 तक सार्वभौमिक मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मज्ञान दक्षता प्राप्त करने के लिए मिशन मोड में लागू किया जा रहा है। स्पष्ट ग्रेड-वार सीखने के परिणाम और बेंचमार्क अधिसूचित किए गए हैं। प्रमुख कार्यनीतियों में विद्या प्रवेश स्कूल तैयारी कार्यक्रम का राष्ट्रव्यापी कार्यान्वयन, निष्ठा-एफएलएन के माध्यम से बड़े पैमाने पर शिक्षक पेशेवर विकास, जादुई पिटारा और ई-जादुई पिटारा जैसी खेल- और गतिविधि-आधारित शिक्षण-अधिगम सामग्री की उपलब्धता, समग्र प्रगति कार्ड के माध्यम से निरंतर रचनात्मक मूल्यांकन और डेटा-संचालित निगरानी शामिल हैं। समय पर सुधार और लक्षित सहायता को सक्षम करने के लिए राष्ट्रीय, राज्य, जिला और ब्लॉक स्तरों पर आवधिक रूप से प्रगति की समीक्षा की जाती है। इन उपायों का उद्देश्य निर्धारित समय-सीमा के भीतर समान पहुंच, बेहतर शिक्षण परिणाम और सार्वभौमिक एफएलएन दक्षता की प्राप्ति सुनिश्चित करना है।

*****